

वाच्य- (voice)-

क्रिया के जिस रूप के द्वारा यह बोध हो, कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया किसके अनुसार प्रयुक्त हो रही है अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त क्रिया कर्ता, कर्म या भाव किसके अनुसार प्रयुक्त हो रही है, इसका बोध कराने वाले शब्द 'वाच्य' कहलाते हैं।

जैसे- अजय पत्र लिखता है। रमा पत्र लिखती है। ⇒ कर्तृवाच्य

वाच्य के भेद — 'तीन भेद'

- ① → कर्तृवाच्य
- ② → कर्मवाच्य
- ③ → भाववाच्य

① कर्तृवाच्य - (Active Voice)

जब किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त हो अर्थात् जब किसी वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो, तो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं -

जैसे - अमित पुस्तक पढ़ता है।
अमिता पुस्तक पढ़ती है। > कर्तृवाच्य

राजेश केला खाता है।
मोनिका केला खाती है।
राजेश केले खाता है।

कर्तृवाच्य

बच्चा पुस्तक लिखता है।
बच्चे पुस्तक लिखते हैं।

कर्तृवाच्य

विशेष- यदि किसी वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग जुड़ा हो और क्रिया तिर्यक स्थिति में नहीं हो, तो वाक्य में प्रयुक्त क्रिया भले ही कर्म के अनुसार क्यों न बदले फिर भी कर्तृवाच्य ही होता है।

जैसे-

अजय ने केला खाया।	राधा ने केला खाया।
अजय ने केले खाए।	↓ कर्तृवाच्य

कर्मा के साधने

- ① → भूतकाल की
- ② → सकर्मक
- ③ → कर्तृवाच्य

किसान ~~ने~~ खेल जोगा।

किसान ~~ने~~ खेल जोग रहा है। - भ्रूण कर्तृ

किसान ~~ने~~ खेल जोग रहा होगा। - संदिग्ध कर्तृ

शायद किसान ~~ने~~ खेल जोग रहा हो - संभाव्य कर्तृ

વિનોદ ને જયપુર જારગા | - સમાન ભવિ

શાયદ વિનોદ ને જયપુર જાય | - સંભવ્ય ભવિ

યદિ વિનોદ ને જયપુર જારગા તો મેં મી જાડુંગા |
 દેતુ દેતુ મ્હ ભવિ